आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा

हिंदी विभाग

प्रा. विकास पाटील

कक्षा – द्वितीय वर्ष

विधा – कहानी

कथा साहित्य का परिचय

कहानी के तत्व

1. कथावस्तु
2. पात्र चरित्र चित्रण
3. संवाद
4. देशकाल, वातावरण
5. भाषाशैली
6. उद्देश्य

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

लेखक परिचय

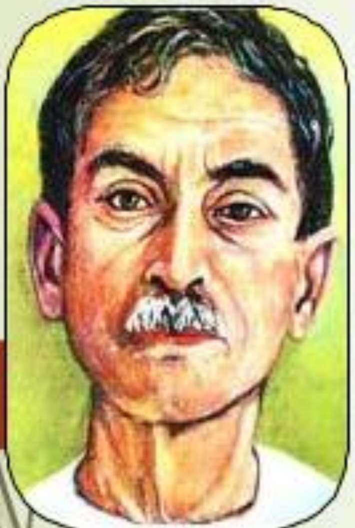

प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं।मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव वाले प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्गदर्शन किया। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी संपादक थे।

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

जीवन परिचय

- प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवनयापन का अध्यापन से। पढने का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ लिया और वे उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिरजा रुसबा और मौलाना शरेर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। १८९८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढाई जारी रखी १९१० में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास लेकर इंटर पास किया और १९१९ में बी.ए.[6] पास करने के बाद स्कूलों के डिप्टी सब-इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा।[7] उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

- वे आर्य समाज़ से प्रभावित रहे, जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाज़िक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और १९०६ में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संताने हुईं- श्रीपत राय, अमृतराय और कमला देवी श्रीवास्तव। १९१० में उनकी रचना सोजे-वतन (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियां जब्त कर नष्ट कर दी गई। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा। इस समय तक प्रेमचंद ,धनपत राय नाम से लिखते थे। उर्दू में प्रकाशित होने वाली ज़माना पत्रिका के सम्पादक और उनके अजीज दोस्त मंशी दयानारायण निगम ने उन्हें प्रेमचंद नाम से लिखने की सलाह दी। इसके बाद वे प्रेमचन्द के नाम से लिखने लगे। उन्होंने आरंभिक लेखन ज़माना पत्रिका में ही किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रुप से बीमार पड़े। उनका उपन्यास मंगलसूत्र पूरा नहीं हो सका और लम्बी बीमारी के बाद ८ अक्टूबर १९३६ को उनकी निधन हो गया।

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

कहानी

- उपनयासों के साथ प्रेमचंद की कहानियों का सिलसिला भी चलता रहा। उनकी पहली उर्दू कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन कानपुर से प्रकाशित होने वाली ज़माना नामक पत्रिका में १९०८ में छपी। प्रेमचंद के कुल नौ कहानी संग्रेह प्रकाशित हुए- 'सपत सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेम-प्रतिमा', 'प्रेम-दवादशी', 'समरयात्रा', 'मानसरोवर' : भाग एक व दो, और 'कफन'। उनकी मृतेयु के बाद उनकी कहानियां 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 भागों में प्रकाशित हुईं। प्रेमचंद के अधयेता कमलकिशोर गोयनका व प्रेमचंद के बेटे अमृतराय ने प्रेमचंद की कई अप्रकाशित कहानियों को ढूंढकर प्रकाशित कराया। प्रेमचंद साहितय के कॉपीराइट से मुक्त होते होते ही ढेरों संपादकों और प्रकाशकों ने प्रेमचंद की कहानियों के संकलन तैयार कर प्रकाशित कराए। प्रेमचंद ने मुखय रूप से ग्रामीण जीवन व मधयवर्गीय जीवन पर कहानियां लिखीं। प्रेमचंद की ऐतिहासिक कहानियाँ तथा प्रेमचंद की प्रेम संबंधी कहानियाँ भी काफी लोकप्रिय साबित हुईं। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ये नाम लिये जा सकते हैं- 'पंच परमेशवर', 'गुल्ली डंडा', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'बडे भाई साहब', 'पूस की रात', 'कफन', 'ठाकुर का कुआ', 'सदगति', 'बूढी काकी', 'तावान', 'विधवंश', 'दूध का दाम', 'मंत्र' आदि

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

पुरस्कार व सम्मान

- प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से ३१ जुलाई १९८० को उनकी जन्मशती के अवसर पर ३० पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया।[26] गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है जिसका चित्र दाहिनी ओर दिया गया है। यहाँ उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहाँ उनकी एक वक्षप्रतिमा भी है।[27] प्रेमचंद की १२५वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई कि वाराणसी से लगे इस गाँव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा।[28] प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। यह पुस्तक १९४४ में पहली बार प्रकाशित हुई थी, लेकिन साहित्य के क्षेत्र में इसके महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसे दुबारा २००५ में संशोधित करके प्रकाशित की गई, इस काम को उनके ही नाती प्रबोध कुमार ने अंजाम दिया। इसका अँग्रेज़ी[29] व हसन मंज़र का किया हुआ उर्दू[30] अनुवाद भी प्रकाशित हुआ। उनके ही बेटे अमृत राय ने कलम का सिपाही नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियाँ लोकप्रिय हुई हैं।[31]

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

- कहानी का परिचय
- कहानी का कथानक

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

अपरिचित शब्द तथा मुहावरे : –

- टीम–टाम – बनाव सिंगार, आडम्बर
- कहार –एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है, भोई
- गुमान – अहंकार
- तिनका – सूखी घास
- निछावर होना – किसी के लिए मर जाना
- मुँह लगना – किसी के सामने बढ–चढकर बाते करना

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

आनंदी का चरित्र चित्रण :–

1. बडे घर की बेटी
2. समझौतावादी
3. आदर्श नारी
4. मायके प्रति गर्व
5. प्रति के प्रति भरोसा

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

आनंदी का चरित्र चित्रण :–

6. सजग
7. अन्याय का विरोध
8. संयमी
9. सच बोलनेवाली
10. दयावती

बडे घर की बेटी –प्रेमचंद

स्वाध्याय :–

1. ‘बडे घर की बेटी’ कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

धन्यवाद!